1

BA part-II (MB) Date - 05.05.2020
(1)

फुलपरासवाली (राजकमल)

एहि कथाक माध्यमसँ कथाकार आर्थिक सुखसँ की बेसीमहत्वपूर्ण वासनात्मक सुख होइछ वा नहि? एहि तथ्यक पड़ताल एहिमे कैल गेल अछि। फुलपरासवाली आर किओ नहि ओ नारी थिकीह, जिनका समक्ष आर्थिक सुख आ वासनाक सुखक चुनाव करबाक अवसर अबैत अछि। तखन ओ की चुनैत छथि?

फुलपरासवाली पं० चन्द्रकान्त झा पेदाल - दिग्गजकसुपुत्र श्री बिल्ट झा केँ धर्मपत्नी थिकीह। परिवारक विषाक्त वातावरणसँ अकच्छ भ' आर्थिक समस्यासँ तंग भेला पर श्री बिल्ट झा बिहारक राजधानी पटना अयलाह। अपन समस्याक समाधानक जोगाड़मे मुदा भगीरथ प्रयासक बादो जखन नहि भेलनि त' खेबाक चांटी अन्न आ वस्त्रक जोगाड़ नहि भेलनि त' रिक्शाक चांटी अन्न आ वस्त्रक जोगाड़ तन - टुटय लगलाह। मुदा किछुए दिनक बाद ज्वर भ' गेलनि।

बिल्ट भाईकेँ दु:खित समाचार जखन तरसँ गाममे भेटलै त' फुलपरासवाली पटना चलि देलनि। तेसर दिन हमरा चौक पर पान खाइत रही त' एकटा छौंड़ा दौड़ल आयल -

मनी मार एकटा देहाती स्त्री बड़ी कालमें अहाँक का पूर्ति छलीह। हम हुनका अहाँक डेरा पहुँचा देलिऐक। एक डेरा दिस डेग बढ़ौलहुँ। डेरा पर गेलहुँ त जानि आबि कहलनि - फुलपरसावाली हुनि किलट मारक स्त्री। ओ सम्भवतो हमर माउग छथि। मौली बाद त'२ पे बजलीह गामने किओ अरबा लेल तैयार नहि भेल त' एक एकारे चलि आएलहुँ। दोसर दिन मौलीक गोर मुँह पर लाल सिन्दुरक आभा देखि, शोहु माद्द एनक पैच - पैच आँखि, पातर ठोरपर मृदु - हास युक्त दैवी आभाकेँ मनहि-मन-प्रणाम कैलहुँ। हमरा प्रबल भेटन लागल जे हिनका मे किछु विशेषता अवश्य छनि। ई साधारण स्त्री नहि भौजीह।

एकर दोसर दिन एकटा भयानक काण्ड भेल एकटा रकशावालाकें किलट मार देलक। मारबाक अपराधमे गिरफ्तार भ'गेलाह। खबरि भेला पर मौलीकें दौगी लावि गेलनि हमर बहुतो प्रयासक बादो हुनका सात बरखक जेल भए गेलनि। मौलीक असाधारण रूप सम्भवतः एकर भ'गेल अरबन हमरा लोकनिक घोर परिवार पर हुनक छाया पड़ल।

मीनाक्षी मौसी माद ककाँ दृष्टपरायण रहलीह। एकर किछुए दिनक बाद मौसी के आकस्मिक परिवर्तन देखल- हमरा प्रतिएँ हुनक स्नेह बढ़ए लगलनि। हमरा मन मे ई भाव अंकुरित होमय लागल - कि मौसी हमरापर आसक्त भ' रहल छथि। हमरा मनक वासनात्मक भाव प्रदर्शित लेल जाग्रत भ' उठल। हुनक साथ पं' कहलियनि - चलु मौसी गंगा कातसँ टहलि आबि। एखन राति कें आब मे विलम्ब हेतैक।

घरके ताला लगा, रिक्शासँ गंगा कात आबि गेलहुँ। घाट पर आबि बैसलहुँ। ओ बहत धार मे छोट- छोट रोड़ी फेकए लगलीह। मौसी हम अहाँक मनक कथा बुझैत छी। हमरा पर सनक सवार भ' गेल। बाँहि कसिकऽ पकड़ि कहलिअनि। मौसी - - - बाजु हम प्राण द' देब। ओ बाँहि छोड़ा ठाढ़ भ' बजलीह। मौसी - हमरा मनक क्षणिक दुर्बलता कें अहाँ अपना प्रति हमर वासनात्मक आकर्षण बुझि लेल।

मौसी ई बयस आ ई यौवन सँभरत - - - आर रोड़ीसँ कहलहुँ - - - कालि कें पर्वतसँ केसी लखन ?

सबर्व - - - भौजी बजलीह - - - तरकन रोड़ी - पाथरक देलसं, अदो - मोतिक देस - कोस चलती। हमरा कहिह गाम द 'आउ ग'। गामक छायामे हमर सिन्दुर ज्योति मलिन नहि होयत। (अहांक कुलमे दाग नहि लागत)। हमर भाव बुझि गेल।

एतावता मिथिला आ मैथिल जनमे युग - युग सँ संचित संस्कृति, परम्परासँ पोषित स्त्रीक संस्कार विकटसँ विकट परिस्थितिमे प्रभावित नहि होयत अछि। मैथिल समाजमे बीसो बाबुक सामाजिक जन्म नहि भ' सकैछ। जे से जावत मुलपरासवाली जीवित रहतीह।

रानी मिश्रा
मैथिली विभाग
R.N College, Pandaul
Madhubani।